(1) Definition of Arts

कला क्या है –

"मानव की वह रचना जो उसके जीवन में आनन्द प्रदान करती है कला कहलाती है।"

कला हर चीज में व्याप्त होता है इसे पहचाने की जरूरत होती है जैसे लिखने - पढ़ने, बोलने, उठने - बैठने आदि।

कला का अर्थ –

'कला' न ज्ञान है, न शिल्प है, न विद्या है, बल्की जिसके द्वारा हमारी आत्मा परमानंद का अनुभव करती है, वही कला है।

परम आनंद की प्राप्ति मनुष्य के जीवन का उद्देश्य होता है और इसे प्राप्त करने की इच्छा हमारी आत्मा को होती है।

कला वस्तु के प्रति भावात्मक अनुभूति को उत्पन्न कर आत्मिक सुख प्रदान करता है। ब्रह्मा द्वारा रचित इस सृष्टि में किसी भी देश की संस्कृति का सम्यक् ज्ञान वहाँ की ललित कलाओं से होता है। भारत की ललित कलाओं का अपना अलग महत्व है।

चित्रकला सभी कलाओं में श्रेष्ठ है यह, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष देने वाली है जैसे - पर्वतों में सुमेरु श्रेष्ठ है, पक्षियों में गरुड़ प्रधान है और मनुष्यों में राजा उत्तम है उसी प्रकार कलाओं में चित्रकला उत्कृष्ट है।

चित्रकला का इतिहास -

चित्रकला का इतिहास उतना ही पुराना कहा जा सकता है, जितना कि मानव सभ्यता के विकास का इतिहास। सत्य तो यह है कि चित्र बनाने की प्रवृत्ति सर्वदा से ही हमारे पूर्वजों

में विद्यमान रही है। मनुष्य ने जिस समय प्रकृति की गोद में आँख खोली, उस समय से ही उसने अपनी मूक भावनाओं को अपनी तूलिका द्वारा टेढ़ी - मेढ़ी रेखा - कृतियों के माध्यम से गुफाओं और चट्टानों की भित्तियों पर अंकित कर अभिव्यक्त किया। अपना सांस्कृतिक विकास करने के लिए मानव ने जिन साधनों को अपनाया, उनमें चित्रकला भी एक साधन थी।

भारतीय चित्रकला का उद्गम भी प्रागैतिहासिक काल से ही माना जाता है। समय के साथ - साथ ज्यों - ज्यों मानव ने विकास किया, भारत में पट कला भी अपने उत्कर्ष को प्राप्त करती रही। वस्तुतः भारतीय चित्रकला की प्रधानता को अनेक विद्वानों ने स्वीकार किया है तथा विश्व में उसकी एक विशिष्ट पहचान है।

कला की परिभाषा –

(1) रवीन्द्रनाथ टैगोर – "कला में मनुष्य स्वयं अपनी अभिव्यक्ति करता है।"

(2) जयशंकर प्रसाद – "ईश्वर की वक्तृत्व शक्ति का वह संकुचित रूप जो हमें बोध के लिए प्राप्त होता है, वही कला है।"

(3) महात्मा गांधी – "कला आत्मा का ईश्वरीय संगीत है।"

(4) प्लेटो – "कला, सत्य की अनुकृति की अनुकृति है।"

(5) अरस्तु – "कला, प्रकृति का अनुकरण है।"

(6) हीगल – हीगल ने कला को आदि भौतिक सत्ता को व्यक्त करने का माध्यम माना है।

(7) रस्किन – "कला, ईश्वरीय कृति के प्रति मानव के आह्लाद की अभिव्यक्ति करता है।"

(8) फ्रायड – "कला में मानव अपनी दमित वासनाओं और कुण्ठाओं की अभिव्यक्ति करता है।"

कला का वर्गीकरण – कला का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक एवं विस्तृत है। कुछ विचारक कला को केवल दो श्रेणियाँ मानते हैं।

(1) उपयोगी कला
(2) ललित कला

(1) उपयोगी कला – इसके अन्तर्गत रंगाई, छपाई, बढ़ई विधि, मिस्त्री विधि, सुनार आदि माने गये हैं।

(2) ललित कला – ललित कलाओं के अन्तर्गत पाँच कलाएँ प्रमुख हैं जो निम्नलिखित हैं –

(1) वास्तुकला (2) मूर्तिकला (3) चित्रकला
(4) संगीत कला (5) काव्यकला

दृश्य कला – दृश्य कला तीन प्रकार की होती है
(1) मूर्तिकला (2) वास्तुकला (3) चित्रकला।

श्रव्य कला – श्रव्य कला दो प्रकार की होती है –
(1) संगीत कला (2) काव्य कला।

चित्रकला के रूप –

वस्तु चित्रण से अभिप्राय – वस्तु या पदार्थ चित्रण का अभिप्राय है कि जिन - जिन पदार्थों का हमें चित्र बनाना हो उनके, रूप - रंग तथा आकार की ऐसी अनुकृति तैयार कर देना है कि देखने वाले को ~~वास्तविक~~ वास्तविक वस्तु और उनके चित्र में कोई अन्तर मालूम न हो। देखने वाला इस भ्रम में पड़

जाये कि वह किसी वस्तु (object) को देख रहा है या किसी के बनाये हुए चित्र को।

स्मृति चित्रण — अपनी स्मृति के आधार पर कभी देखी - सुनी घटनाओं, वस्तुओं अथवा दृश्यादि का चित्रण ही स्मृति - चित्रण कहलाता है।

स्वतन्त्र भाव प्रकाशन की भूमिका — चित्रकला में स्वतन्त्र भाव - प्रकाशन का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इसका अर्थ विचारों या भावों को स्वतन्त्रतापूर्वक प्रकट करना है। अर्थात मन में उत्पन्न भावों की झलक को चित्र द्वारा प्रकट करना ही स्वतन्त्र भाव - प्रकाशन है।

कहानी चित्रण — स्वतन्त्र भाव - प्रकाशन का ही एक रूप कहानी चित्रण है। जिन चित्रों की सहायता से किसी विशेष कहानी को दर्शाया जाता है, उसे कहानी चित्रण (Story Telling Drawing) कहते हैं।

विज्ञापन चित्र का महत्व – विज्ञापन चित्र एक प्रकार का प्रचार चित्र है, जो निश्चित वस्तुओं तथा सेवाओं के अस्तित्व तथा विशेषताओं की ओर ध्यान आकृष्ट करता है।

छाया तथा दृश्य-चित्र के उदाहरण – वस्तु या प्राणी के आकारों को छाया द्वारा प्रकट किये जाने वालें चित्रों को छाया - चित्र (Mass Drawing) कहते है।

जिन चित्रों में विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक दृश्यों को दिखाया जाता है, उसे दृश्य - चित्र (Scenery) है कहते है दृश्य - चित्र मे सुन्दरता, ~~अनु~~ अनुपात, सन्तुलन आदि बातों का पूर्ण रूप से होना आवश्यक है।

अक्षर कला – आधुनिक युग में अक्षर ड्राइंग का एक विशेष महत्व है। किसी माडेल का नाम मानचित्रों या विज्ञापन चित्रों का सौन्दर्य कलात्मक अक्षर पर ही निर्भर

करता है। इसलिए कला के विद्यार्थियों के लिए अक्षर कला ड्राइंग का ज्ञान अत्यन्त उपयोगी है।

आलेखन कला के सिद्धान्त —
अलंकारपूर्ण रचना को आलेखन कहते हैं। अंग्रेजी भाषा में इसे डिजाइन कहते हैं संक्षेप में, किसी धरातल को अलंकृत करनेवाली विशिष्ट रचना को आलेखन (Design) कहते हैं।

निमंत्रण तथा बधाई पत्र के उदाहरण —
तुम्हारे घर में जब तिलक, शादी - ब्याह आदि ऐसे शुभ अवसर आते हैं, तो उस समय तुम अपने मित्रों को और सगे - सम्बन्धियों को इस आशय का सूचना - पत्र भेजते हैं, जो रंग - बिरंगे छपे कागज पर लिखा या छपा होता है। इसे निमंत्रण - पत्र कहते हैं। इसी प्रकार का एक और पत्र है, जो प्राय: नये वर्ष के अवसर पर तुम्हारे घर मित्रों, सगे - सम्बन्धी भेजते हैं, जिसमें

इस बात की शुभकामना प्रकट की जाती है, कि 'नया साल आपके लिए शुभ, मंगलमय एवं लाभकारी हो।'

सजाने के माध्यम

छिन्न पट्टिका (stencil) — 'स्टेन्सिल' सजावट का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। जब किसी लेख या डिजाइन को बार-बार छापने की आवश्यकता पड़ती है, तो स्टेन्सिल का प्रयोग करते हैं। इसके द्वारा थोड़े समय में अधिक स्थानों पर एक जैसे चित्र बनाये जा सकते हैं।

भारतीय कला और संस्कृति का परस्पर संबंध —

कला मानव संस्कृति की उपज है। इसका उदय मानव की सौन्दर्य भावना का परिचायक है। इस भावना की वृत्ति व मानसिक विकास के लिए

ही विभिन्न कलाओं का विकास हुआ है। कलाकार भी अपने अव्यक्त भावों को विभिन्न माध्यमों से व्यक्त करता है। "सौन्दर्य की अभिव्यक्ति द्वारा सुख प्रदान करने वाली वस्तु ही कला है।"

आधुनिक कला एवं लोक कला — इसमें कई प्रकार की प्रवृत्तियाँ दिखाई पड़ती है —

(1) कुछ कलाकृतियाँ प्रकृति के बाह्य संसार की अनुकरणीय प्रवृत्ति को बताती है। इन पर यथार्थवाद एवं प्रकृतिवाद का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है।

(2) कुछ कलाकृतियों पर अध्यात्मवाद एवं भविष्यवाद का प्रभाव स्पष्ट झलकता है।

(3) कुछ कलाकृतियाँ कलाकार की अनुभूतियों और व्यक्तिगत संवेदनाओं को अभिव्यक्त करती है।

(4) कुछ कलाकृतियाँ कलाकार के विशिष्ट कौशल को प्रदर्शित करती हैं जिनमें उनको विविध कलात्मक सामग्री के गुणों और उनके प्रयोगों की समझ परिलक्षित होती है।

लोक कला — आदिकालीन व्यक्तियों की कला का विकसित रूप है, यह प्रकृतिवादी शैली में रचित हुई जिसमें बहुमुखी भावनाएँ विद्यमान हैं। लोक कलाकार अपनी भावनाओं को किसी वस्तु के माध्यम से दर्शाते हैं और भावनाओं तथा वस्तु में समानता इतना अधिक होता है कि रचनाकार अपने व्यक्तित्व और वस्तु में अंतर करने में असमर्थ रहता है। भारतवर्ष में लोक कलाएँ अत्यन्त समृद्ध हैं। राजपूत शैली, राजस्थानी शैली, मेवाड़ शैली, कांगड़ा शैली, मुगलकालीन शैली आदि ~~कला~~ कलाएँ कला जगत पर अपनी विशिष्ट छाप रखती हैं।